‘अस्सी के दशक में हिन्दी कविता का स्वरूप और राजेश जोशी का काव्य संसार’

राँची विश्वविद्यालय, राँची की पीएच0 डी0 उपाधि हेतु, प्रस्तुत

शोध– सार

हिन्दी–विभाग

मानविकी संकाय

शोध– निर्देशिका

डॉ. किरण तिवारी

सहायक प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग

राँची वीमेन्स कॉलेज, राँची

शोधार्थी

अजय कुमार सामंतराय

स्नातकोत्तर (हिन्दी विभाग)

राँची विश्वविद्यालय, राँची

राँची विश्वविद्यालय, राँची

2025

भूमिका

अपने पल्लवन के काल ही से हिन्दी कविता का स्वरूप कई बार बदला। चारणकाल से लेकर श्रृंगारिक होती हुई हिन्दी कविता ने भक्तिकाल में आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार करने में महती भूमिका निभाई। कविता का सभ्यता और संस्कृति के विकास में भी अहम योगदान रहा और आजादी के आंदोलन को भी कविता ने खूब सजाया–सँवारा।

आजादी मिलने के बाद भी कविता का स्वरूप कई बार बदला। प्रयोगवाद, अकविता,समकालीन कविता आदि मगर नौवें दशक (1980–1989) की कविता हिन्दी साहित्य के इतिहास और आलोचना में एक विशेष स्थान रखती है। यह वह समय था जब राजनीतिक और सामाजिक स्थितियों में आमूल परिवर्तन आया। सोवियत संघ के विघटन की तैयारियाँ हो चुकी थीं और स्त्री मुक्ति आंदोलन जोर पकड़ रहा था। लगे हाथों ओम प्रकाश वाल्मीकि के नेतृत्व में दलित–विमर्श का भी स्वर मजबूत हो रहा था। कवि लगातार सामाजिक असुरक्षा के बोध की कविताएँ लिख रहे थे। अस्सी के पहले जहाँ बाबा नागार्जुन और धूमिल कविता में राजनीतिक शब्दावलियों का प्रयोग बेधड़क कर रहे थे अब उस शैली का प्रयोग बहुत कम हो गया था। कवियों ने अपने कहन का तरीका बदल दिया था।

अस्सी के दशक को अनेक कवियों ने अपनी कविताओं से समृद्ध किया जिनमें प्रतिनिधि कवियों के नाम इस प्रकार हैं– मंगलेश डबराल, राजेश जोशी, अरुण कमल, आलोक धन्वा, असद जैदी मनमोहन, विजय कुमार, अनामिका, कुमार अम्बुज, संजय चतुर्वेदी, कात्यायनी आदि नामों की लंबी सूची है जिन्होंने अस्सी के

दशक की कविता को नया रूप, शिल्प और कथ्य दिया। इन कवियों ने अस्सी के दशक को एक नयी पहचान दी और समकालीन कविता की धारा को खुश्क होने से बचाते हुए उसे नमी प्रदान की तथा कविता की नई जमीन की सिंचाई की।

शोध का विषय

अस्सी के दशक में हिन्दी कविता का स्वरूप और राजेश जोशी का काव्य–संसार

शोध की परिकल्पना

अपनी लम्बी विकास यात्रा तय करने के क्रम में हिन्दी कविता ने कई पड़ाव पार किये हैं। अस्सी का दशक उन पड़ावों में विशेष स्थान रखता है। समकालीन कविता का यह दशक मुझे उसी समय से अपनी ओर अध्ययन के लिए खींचता था जब मैं स्नातकोत्तर में हिन्दी का विद्यार्थी था। असल में इस दशक की काव्य प्रवृत्तियों का शोध करना अत्यंत रोमांचक और चुनौतीपूर्ण है।

मुझे कविताओं ने तब अपनी ओर अधिक आकर्षित किया जब उनकी भाषा जन की भाषा बनी, जब उनका शिल्प दुरूह से सरल हुआ और विशेष रूप से इस दशक की कविता ने ही मेरे भीतर के सहृदय को जगाया और मुझमें साहित्यिक संस्कार भी भरे। मंगलेश डबराल की 'संगतकार', 'पहाड़ पर लालटेन', 'अभिनय', राजेश जोशी की 'बच्चे काम पर जा रहे हैं', 'दादा खैरियत', 'असली किस्सा तबीयत के हिरन हो जाने का', 'बसंत 1985', 'नेपथ्य में हँसी' अरुण कमल की 'धार', 'उर्वर प्रदेश', 'स्नान–पर्व', 'सेवक' भगवत रावत की 'आँच' 'मानुस गंध', 'मुझे अभी जाना है', 'ऐसी भाषा' आदि कविताओं ने मेरे भीतर नये अनुभव जगाए।

स्नातकोत्तर के समय से ही इस दशक की कविताओं पर शोध करने की ललक छात्र मन में जाग गई थी। यह तय कर लिया था कि जब कभी शोधार्थी बनने का मौका मिला तो इस दशक की कविताओं का गहन अध्ययन कर कविता की नई प्रवृत्तियों की तलाश अवश्य करूँगा फिर इस दमित इच्छा को बल मिला समकालीन कविता के प्रतिनिधि कवि राजेश जोशी की आलोचनात्मक कृति 'कवि की नोटबुक' से जिसे पढ़कर यह इच्छा बलवती हो उठी।

शोध का महत्व

हिन्दी कविता के महत्व के हिसाब से नौवां दशक बहुत महत्वपूर्ण है। इस दशक ने जहाँ एक ओर नये काव्य शिल्प गढ़े, भाषा गढ़ी वहीं इस जीवन और जगत को देखने का नया नजरिया दिया। आठवें दशक तक आते–आते कविता पूरी तरह राजनैतिक होकर नारों में बदल गई थी। कविता की भाषा से काव्य रस कहीं खो गया था। कवि की भाषा तू–तड़ाक और अमर्यादित हो गई थी– 'आजादी तीन थके हुए रंगों का नाम है

जिसे एक चरखा ढोता है।' (धूमिल)

'इंदु जी, इंदु जी

क्या हुआ आपको

सत्ता के लोभ में

भूल गईं बाप को।' (नागार्जुन)

नौवें दशक की कविता ने भाषा को संयमित होना फिर से सिखाया इसलिए शोध की दृष्टि से इस दशक की कविताओं का महत्व बढ़ जाता है। इस दशक की

कविता पर शोध इसकी माँग है। समकालीन कविता में साठोत्तर या सत्तर के दशक की कविताओं पर बहुत अधिक शोध हुए मगर इस दशक पर जितने शोध हुए वे दशक को समझने के लिए कमतर मालूम पड़ते हैं। इसलिए दशक पर शोध–कार्य होना बहुत जरूरी है।

शोध का उद्देश्य

बिना उद्देश्य के कोई कार्य नहीं होता। उद्देश्य भी दो तरह के होते हैं– साधारण उद्देश्य और गूढ़ उद्देश्य। साधारण उद्देश्य में स्वार्थ की भावना निहित होती है मगर गूढ़ उद्देश्य निःस्वार्थ होता है। इसके अंतर्गत किसी विषय अथवा विमर्श में अंतर्निहित रहस्य को उद्घाटित कर उसे आम पाठकों तक पहुँचाना होता ळें समकालीन कविता पर शोध करने का उद्देश्य उसकी प्रवृत्तियों को देखना, जानना और परखना है। और समकालीन कविता के इस दशक, विशेष रूप से (1980–89)। इस दौर की कविता का उभार जिन परिस्थितियों में हुआ 1990 के बाद वे परिस्थितियाँ इतनी बदलीं कि 1990 के दशक की कविताएँ उन पर हावी होने लगीं। इस शोध का यह उद्देश्य है कि उन परिस्थितियों की फिर से पड़ताल हो और कोई नया निष्कर्ष निकले। अस्सी के दशक की कविताओं का शोध क्षेत्र व्यापक है अतः इन पर बड़े कैनवस पर काम और चर्चा होनी चाहिए जिससे हिन्दी काव्य आलोचना को इस ओर मुड़कर देखने की आवश्यकता महसूस हो।

शोध का लक्ष्य

अस्सी के दशक की कविताओं को फिर से पढ़ना, उस दौर और उन परिस्थितियों को महसूस कर कविता की गति और प्रकृति को समझने की कोशिश करना। इस दशक के लगभग सारे प्रतिनिधि कवियों की कविताओं से दो–चार होना तथा उन विशेष परिस्थितियों पर शोध के माध्यम से नये तत्वों को खोज निकालना।

शोध की प्रासंगिकता

जितनी प्रासंगिक समकालीन कविता है, जितना प्रासंगिक अस्सी का दशक है और उस दौरान घटने वाली घटनाएँ हैं उतना ही प्रासंगिक यह शोध भी है। कविता जीवन से जुड़ी हुई वस्तु है, यह कभी अप्रासंगिक नहीं हो सकती। जिस दशक पर हमारा शोध है, वह दशक सामाजिक और राजनैतिक जीवन में एक नई उथल–पुथल लेकर आया। सोवियत संघ के ढाँचे का गिरना लगभग तय हो चुका था जिससे कई देशों के व्यापारिक और सामरिक संबंधों पर बहुत फर्क पड़नेवाला था। उसके तुरंत बाद युद्ध के बादल पूरे विश्व पर मँडराने लगे जिससे आज भी पूरी दुनिया त्रस्त है। सांप्रदायिक ताकतों का उभार होने लगा था जिनसे पूरा विश्व तो परेशान है ही भारत भी त्रस्त है। इन परिस्थितियों को कविताओं के माध्यम से समझना और उनके रहस्य का उद्घाटन आज भी प्रासंगिक है। यही इस शोध की प्रासंगिकता है।

पूर्व में किए गए शोध–कार्य

1. राजेश जोशी : सृजन के आयाम गायकवाड़, पंडित साहेबराव – डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, 2007
2. राजेश जोशी का काव्य : संवेदना और शिल्प उर्मिला देवी महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, 2014
3. राजेश जोशी के काव्य में सामाजिक यथार्थ लता वी०, मंगलोर विश्वविद्यालय, 2022
4. राजेश जोशी की कविता : एक विश्लेषण रेम्या चंद्रन, महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, 2021
5. समकालीन हिन्दी कविता में समय और समाज इरशाद मोहम्मद, पंजाब विश्वविद्यालय, 1995
6. समकालीन हिन्दी कविता और राजनीतिक संदर्भ जया, डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, 2008

भविष्य में होनेवाले शोध–कार्य की संभावना

यह एक ऐसा विषय है जिसमें शोध–कार्य की असीम संभावनाएँ हैं। कविता के क्षेत्र में या कथा साहित्य में वैसे भी शोध की संभावनाएँ कभी खत्म नहीं होतीं। अस्सी के दशक को उसके किसी भी प्रतिनिधि कवि के साथ मिलाकर उस दशक की भाषा, वैचारिकता, शिल्प, अवधारणात्मक परिवर्तन आदि अनेक क्षेत्र हैं जिनमें शोध किया जा सकता है और वह शोध गुणवत्तापूर्ण भी होगा।

शोध में प्रयुक्त पद्धति/प्रविधि

1 . सर्वेक्षण विधि

2 . साक्षात्कार विधि

3 . विश्लेषण विधि

4 . ऐतिहासिक विधि

5 . सैद्धांतिक विधि

6 . वर्णनात्मक विधि

शोध में प्रयुक्त प्रदत्त

1. विभिन्न पुस्तकालयों का सर्वेक्षण कर शोध संबंधित विषय पर अध्ययन किया जाएगा साथ ही डिजिटल पुस्तकालय और पुस्तकों का भी अध्ययन किया जाएगा।
2. पूर्व में किए गए शोध कार्यों का गहन अध्ययन कर प्रदत्त की प्राप्ति की जाएगी।
3. अस्सी के दशक की कविताओं पर लिखी आलोचना 'एक कवि की नोटबुक'– राजेश जोशी, 'कविता और समय'– अरुण कमल, 'कविता के पते–ठिकाने, कविता की संगत'– विजय कुमार तथा ऐसी ही अन्य पुस्तकों के अध्ययन से प्रदत्त की प्राप्ति की जाएगी।
4. पत्र–पत्रिकाओं, विशेषांकों आदि से प्रदत्त प्राप्त की जाएगी।
5. समकालीन कविता के ख्यातिप्राप्त कवियों के साक्षात्कारों के माध्यम से प्रदत्त की प्राप्ति की जाएगी।

प्रस्तावित शोध की रूप रेखा

अध्याय :– 1 हिन्दी कविता की विकास यात्रा – एक विहंगम दृष्टि

क) प्रयोगवाद और नई कविता

ख) साठोत्तरी हिन्दी कविता

ग) हिन्दी कविताः नौवें दशक से अद्यतन

अध्याय :– 2 अस्सी के दशक की विशेष परिस्थितियाँ और हिन्दी कविता का स्वरूप

क) राजनैतिक परिस्थितियाँ

ख) सामाजिक परिस्थितियाँ

ग) स्त्री मुक्ति आंदोलन

अध्याय :– 3 राजेश जोशी का काव्य संसार

क) कविता में वर्णित मध्यवर्ग

ख) कविता में वर्णित सामाजिक यथार्थ

ग) राजेश जोशी की कविताओं में वर्णित राजनैतिक परिस्थितियाँ

अध्याय :– 4 राजेश जोशी की कविता के अंतर्वस्तु और काव्य–शिल्प

क) कथन की नई शैली

ख) राजेश जोशी की काव्य भाषा

ग) राजेश जोशी के काव्य के विषय वस्तु

अध्याय :– 5 अस्सी के दशक के अन्य प्रतिनिधि कवियों से राजेश जोशी का तुलनात्मक अध्ययन

क) मंगलेश डबराल, असद जैदी, अरुण कमल और राजेश जोशी

ख) मनमोहन कुमार अम्बुज, ज्ञानेन्द्र पति और राजेश जोशी

ग) आलोक धन्वा, विजय कुमार और राजेश जोशी

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

क्र0 सं0	पुस्तक का नाम	रचनाकार का नाम	प्रकाशन वर्ष
01.	एक दिन बोलेंगे पेड़	राजेश जोशी	1980
02.	मिट्टी का चेहरा	राजेश जोशी	1985
03.	नेपथ्य में हँसी	राजेश जोशी	1994
04.	दो पंक्तियों के बीच	राजेश जोशी	2000
05.	चाँद की वर्तनी	राजेश जोशी	2006
06.	ज़िद	राजेश जोशी	2015
07.	उल्लंघन	राजेश जोशी	2021

सहायक ग्रंथ

क्र0 सं0	पुस्तक का नाम	रचनाकार का नाम	प्रकाशन वर्ष
01.	एक कवि की नोटबुक	राजेश जोशी	2004
02.	समकालीनता और साहित्य	राजेश जोशी	2010

अन्यः– वेब साइट्स तथा वेब पात्रिका

नोट : यह शोध अस्सी के दशक की कविताओं पर अंतिम शोध नहीं है। इसके पश्चात भी कोई शोधार्थी नई दृष्टि के साथ कोई नया शोध अवश्य कर सकता है।